Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

प्रेमचंद के नजर में दलित चेतना : समस्याएँ और समाधान ('सद्गति' कहानी के संदर्भ में)

प्रदीप कुमार साव

शोध छात्र, हिंदी विभाग,काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 57-60
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 10 Sep 2020
Published : 23 Sep 2020

शोध आलेख सार

प्रेमचंद ने 'सद्गति' कहानी के माध्यम से समाज के यथार्थ को उजागर किया है। प्रेमचंद के समकालीन समाज में प्रखर रूप से जाति-पाति, वर्गों का भेदभाव था। उस समय में ब्राह्मणों का आदर सत्कार था। बाहरी रूप से दिखावा करते थे पर आंतरिक रूप से धर्म संस्कार के नाम पर निम्न जातियों पर शोषण करता था। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज की कुरीतियों के साथ-साथ उस वर्ग को उभारते हैं जो हाशिए पर पड़ा है।

मुख्य शब्द – सद्गति, भेदभाव

समाज में ब्राह्मणों ने अपने फायदे के लिए धर्म के मूल बातों को हटाकर अपने द्वारा बनाए गए बातों को रखा। जिससे उसका समाज पर वर्चस्व रहे और उसे मान- सम्मान मिलता रहेइन बातों से ब्राह्मणों द्वारा पाखंड नजर आता है जब दुखी चमार पंडित के घर आता है जो पंडिताइन कहती है **"चमार हो, धोबी हो, पासी हो, मुंह उठाए घर में चला आएहिंदू का घर ना हुआ, कोई सराय हुई।"**[1] दुखी से काम कराते समय छुआछूत की भावना नहीं आती, जहां अपना नुकसान होने की बात हो वहां छुआछूत की भावना ले आता है। जब दुखी चमार पंडित का काम करते हुए 'सद्गति' प्राप्त कर लेता है तब किसी ने भी लाश को नहीं उठाया तब मजबूरन सुबह-सुबह कोई ना देखें, उस समय लाश को घसीटते हुए ले जाता है। सद्गति कहानी में मानवीयता का अभाव पंडित और पंडिताइन में दिखाया गया है जहां प्रेमचंद संकेत करते हैं ब्राह्मण के पास और अमानवीयता का भाव भी होता है। जब दुखी चमार पंडित के घर अपनी बेटी की सगाई हेतु नजराने के साथ साइत-सगुन निकलवाने जाता है तब उसे अपने काम करने को कहता है जिससे झाड़ू लगाना, गोबर से बैठक के स्थान पर लिपना , फिर लकड़ी चीरने को भी कहा गया। भूखे पेट दुखी चमार पंडित के घर आया था। दोपहर हो चली थी खाना तक नहीं दिया गया जब लकड़ी चीरने पर

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आराम करने लगा उस पर दुखी चमार को कहा **"अरे दुखिया तू सो रहा है ?लकड़ी तो अभी ज्यों की त्यों पड़ी हुई है। इतनी देर तक तो क्या करता रहा? मुट्ठी भर भूषा ढोने में सांझ कर दी, उस पर सो रहा है तुझसे जरा सी लकड़ी भी नहीं फटती"**[2] फिर साइत भी वैसी निकलेगी। मुझे दोष मत देना यह बात सुनकर चमार के हाथों में ना जाने कहां से 'अदृश्य शक्ति' आ गई थी वह लकड़ी पर प्रहार करने लगा हुआ।वह सुध बुध खो कर प्रहार करता रहा अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है। पंडिताइन में अमानवीयता का भाव दिखता है। जब दुखी चमार चिलम जलाने को आग मांगता है तो पंडिताइन चिमटे से पकड़ कर आग लाती है। पांच हाथ की दूरी से घूंघट की आड़ से दुखी की तरफ आग की बड़ी चिंगारी दुखी के सिर पर लगी।जिसके घर का काम कर रहा हूं वहां इस तरह का व्यवहार करना अमानवीय है। पंडिताइन की दूसरी बात से पता चलता है उसमें संवेदनशीलता एवं सहानुभूति भी नहीं दिखती। यथा **"जब पंडित कहता है वह दुखी चमार लकड़ी चीरते-चीरते मर गया। अब क्या होगा? तब पंडिताइन कहती है होगा क्या,चमरौने में कहला भेजो, मुर्दा उठा ले जाए।"**[3] अगर स्वभाविक रूप से दया य सहानुभूति आती भी है तो वहां स्वार्थ का पर्दा उसे ढक देता है। जैसे पंडिताइन कहती है **"चमरवा को भी कुछ खाने को दे दो, बेचारा कब से काम कर रहा है। भूखा होगा"। "पंडित पूछता है रोटियां है? तो पंडिताइन कहती है दो-चार बची है। पंडित करता है दो-चार से क्या होगा चमार है उसे तो शेर भर चाहिए ऐसा करो की भूसी चौकर मिला कर दो मोटी रोटियां बना दो पर पंडिताइन बोलती है पत्नी रोटियों से इन नीचों का पेट नहीं भरता, अब जाने भी दो धूप में कौन मरे।"**[4]

दूसरी तरफ प्रेमचंद ने दिखाया है समाज के पीड़ित तबके में संवेदनशीलता होती है जैसे चमार का साथी गोड़ जिसे पता था कि यह पंडित लोग काम तो करवा लेते हैं पर खाने को या दूसरे के काम के समय साथ नहीं देते हैं इसलिए दुखी चमार को देख दया आती है तो उसके लकड़ी चीरने में सहायता भी करता है जो कि चमार के अंदर ब्राह्मणों के प्रति जो आस्था है और भाई आधारित है उसके आदर सत्कार करता है जो समाज पुराने समय से ब्राह्मणों को मान सम्मान करते आ रहे थे वह संस्कार, कर्म बन गया था। उसी बात को लेकर दुखी चमार समाज भी कर्मों से छूटा नहीं था। दुखी चमार की सामाजिक व्यवहारिक सोच बनी हुई थी। जो एक सामाजिक व्यक्ति का परिचय देता है। दुखी चमार समाज व्यवस्था को इतनी तन्मयता से अपनाया हुआ है कि वह पंडित जी के घर खाली हाथ जाने से भी डरता है। प्रेमचंद कहते हैं **"उस खाली हाथ देखकर तो पंडित जी उसे दूर से ही दुत्कार देते"**[5] दुखी चमार इतना डरता है, वह खाना खाने के लिए वह वापस घर नहीं जाता बल्कि पंडित का ही काम करता है क्योंकि पंडित जी भड़क जाए। मानसिकता को दिखाएं है पहली जो निराशा को दिखाते हैं वहीं दूसरी तरफ आशा की बात करते हैं। पहली निराशा को दिखाते हैं ब्राह्मण धर्म पाखंड और अंधविश्वास जैसी चीजों को मानकर दुखी चमार जैसे लोग फंस जाते हैं। दुखी अछूत कहे जाने वाले वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वह मानता है कि मैं पिछले जन्म में पाप किया है तभी नीच जाति में जन्म हुआ और अगर ब्राह्मण की सेवा करे तो हमें सद्गति प्राप्त होगी क्योंकि चमार जानता है कि उस पर अन्याय हो रहा है वो नियति मान लेता है। जो स्वयं सोचता है **"साइत का ही सब खेल है जिस चाहे बना दे जिस चाहे बिगाड़ दे"**[6] यहां प्रेमचंद निम्न वर्ग को ही जिम्मेदार ठहराया। पिछड़े वर्ग विरोध नहीं करता है। नियति को मान लेता है जिससे ब्राह्मण इसी का फायदा उठाकर उस पर शोषण करता है। यह मान लेता है कि मैं पंडित के घर में घुस गया हूं क्योंकि यह गलत है और जो पंडिताइन के

आग मांगने पर उसके तरफ आग फेकता है तो चिंगारी दुखी के सिर पर जा लगा उसके मन ने कहा यह एक पवित्र ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने का फल है भगवान ने कितने जल्दी फल दे दिया। एक और बात से और पता चलता है कि वह कितने अपने आप को छोटा समझता है जिसमें स्वाभिमान की भावना नहीं है। जब गोड़ पूछता है **"कुछ खाने को मिला कि काम ही कराना जानते हैं जाकर मांगते क्यों नहीं ?तब दुखी कहता है कैसे बात करते हो ,चिखुरी ब्राह्मण की रोटी हमको पचेगी।"**[7]

दूसरी तरफ प्रेमचंद ने गोड़ के माध्यम से आशा की किरण को जीवित रखा है।वह इस बात को भलीभांति जान गया है ब्राह्मण केवल नाम का है जो दूसरों पर शोषण करता है काम करवाता है बेगारी करवाता है खाने को कुछ देता नहीं है हकीम भी बेगारी लेता है तो थोड़ी बहुत मजबूरी दे देता है।यह तो उनसे भी बढ़ गए, उस पर परमात्मा बनते हैं इसलिए दुखी चमार को काम करने से मना करता है और जब दुखी चमार लकड़ी चीरते-चीरते मृत्यु प्राप्त कर लेता है। तब **"गोड़ ने चमरौधे में जाकर सबसे कह दिया खबरदार मुर्दा उठाने मत जाना। अभी पुलिस की तहकीकात होगी दिललगी है कि गरीब की जान ले ली। पंडित अपने घर के होंगे।उठाओगे तो तुम भी पकड़े जाओगे ।इस तरह गौड़ ने लोगों को बोल दिया।"**[8] पंडित जी ने चामारों को बहुत धमकाया, समझाया पर चमारों के दिल पर पुलिस का रोब छाया हुआ था।आखिर इस बार पंडित निराश होकर लौट आए। इस तरह पंडित के प्रति विरोध जाहिर किया गया, ऐसा प्रतीत होता है कि समाज में भी ऐसे लोग सामने आए हैं जो सोशल पंडितों के द्वारा नहीं होना चाहते हैं। जो समाज में साम्यवाद चाहते हैं,जो समाज में बदलाव चाहते हैं यह प्रेमचंद द्वारा समाज के बदलाव होने का संकेत है।

इस कहानी में प्रेमचंद ने कहीं कहीं एक का जगह व्यंग किए हैं जैसे जिसमें पर हुआ समाज में ब्राह्मणों के प्रति कहे गए हैं जैसे उसके पूजा पाठ की बातों को उसके खेती कहते हैं। पर जो सबसे बड़ा व्यंग दिखता है वह **'सद्गति'** शीर्षक में ही है में है। सद्गति प्राप्त कर लिया यानी मोक्ष प्राप्त कर दिया जो जन्म जन्मांतर से एक धारणा बनी हुई है पंडित अंतिम संस्कार के समय छूने से प्राप्त कर लेता है। जब पंडित ने दुखी चमार की लाश को गांव के बाहर ले जाता है। प्रेमचंद कहते हैं कि उसकी सद्गति प्राप्त हो गई। इस तरह दुर्गति को प्रेमचंद जी सद्गति कहकर व्यंग करते है। यही जीवन पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था।

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने इस कहानी में अपने समय के यथार्थ के एक पक्ष को उतारते हैं। जिसमें समाज के उच्च जाति के प्रति विरोध का भाव को दिखाते हैं।तथा दुखी चमार जैसे लोगों की स्वाभिमान समाप्त हो रहे हैं तथा अपने आप नीच मान लेना, नियतिवाद में जीना एक स्वयं शोषण होने के जिम्मेदार हैं। दूसरी तरफ जैसे लोगों से प्रेमचंद ने समाज के बदलाव होने का संकेत किया है।

मूल ग्रंथ

1. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-111
2. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-114
3. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-115
4. प्रतिनिधि कहानियाँ –प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-112
5. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-111
6. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-112
7. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-113
8. प्रतिनिधि कहानियाँ – प्रेमचंद, सम्पादन- भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, 2018,पेज-115

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी कहानी का विकास- मधुरेश, समित प्रकशन, इलाहाबाद – 2018
2. हिन्दी कहानी का इतिहास – गोपाल राय-राजकमल प्रकाशन -2018
3. परिकथा, द्विमासिक हिन्दी पत्रिका, गाँव–किसान अंक, जुलाई –अगस्त, 2019
4. हंस, मासिक हिन्दी पत्रिका, संपादक- राजेंद्र यादव,अगस्त,-2006
5. आजकल, हिन्दी पत्रिका,संपादक- फरहत परवीन, जुलाई-2015